



1061CH11

## एकादशः पाठः

# प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्

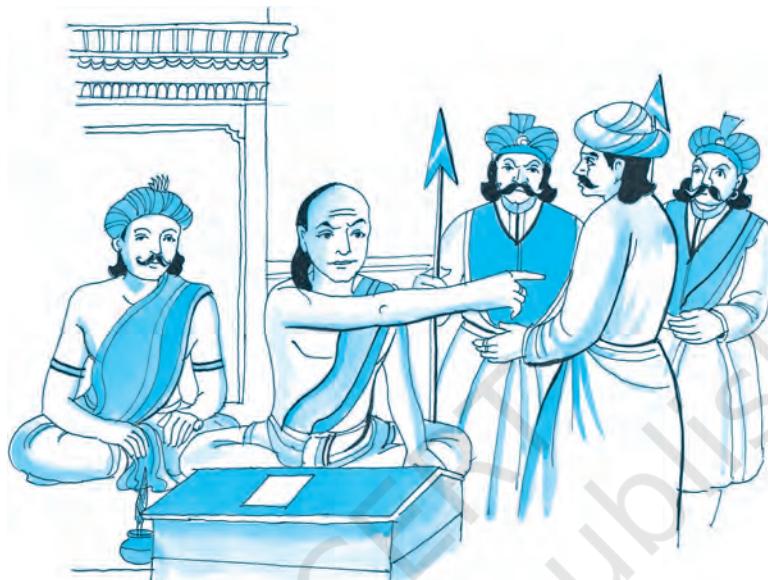
प्रस्तुतोऽयं नाट्यांशः महाकविविशाखदत्तस्य कृतिः “मुद्राराक्षसम्” इति नाटकस्य प्रथमाङ्काद् उद्घृतोऽस्ति। नाटकस्य अस्मिन् भागे चन्दनदासः स्वसुहृदर्थं प्राणोत्सर्गं कर्तुमपि प्रयतते। अत्र कथानके नन्दवंशस्य विनाशानन्तरं तस्य हितैषिणां बन्धनक्रमे चाणक्येन चन्दनदासः सम्प्राप्तः। बद्धोऽपि चन्दनदासः अमात्यादीनां विषये न किमपि रहस्यं प्रोक्तवान्। वार्तालापप्रसङ्गे राजदण्डभीतिः समुत्पादनेऽपि सः गोप्यरहस्यम् अनुद्घाट्य राजदण्डं स्वीकृत्य सुहृदि निष्ठां प्रबोधयति।

- चाणक्यः** - वत्स! मणिकारश्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।
- शिष्यः** - तथेति (निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य) इतः इतः श्रेष्ठिन्! (उभौ परिक्रामतः)
- शिष्यः** - (उपसृत्य) उपाध्याय! अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः।
- चन्दनदासः** - जयत्वार्यः
- चाणक्यः** - श्रेष्ठिन्! स्वागतं ते। अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः?
- चन्दनदासः** - (आत्मगतम्) अत्यादरः शङ्कनीयः। (प्रकाशम्) अथ किम्। आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।
- चाणक्यः** - भो श्रेष्ठिन्! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।
- चन्दनदासः** - आज्ञापयतु आर्यः, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।
- चाणक्यः** - भो श्रेष्ठिन्! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवतामपरिक्लेश एव।
- चन्दनदासः** - (सहर्षम्) आर्य! अनुगृहीतोऽस्मि।

- चाणक्यः** - भो श्रेष्ठिन्! स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननु भवता  
प्रष्टव्याः स्मः।
- चन्दनदासः** - आज्ञापयतु आर्यः।
- चाणक्यः** - राजनि अविरुद्धवृत्तिर्भव।
- चन्दनदासः** - आर्य! कः पुनरधन्यो राज्ञो विरुद्ध इति आर्येणावगम्यते?
- चाणक्यः** - भवानेव तावत् प्रथमम्।
- चन्दनदासः** - (कणों पिधाय) शान्तं पापम्, शान्तं पापम्। कीदृशस्तृणानामग्निना  
सह विरोधः?
- चाणक्यः** - अयमीदृशो विरोधः यत् त्वमद्यापि राजापश्यकारिणोऽमात्यराक्षसस्य  
गृहजनं स्वगृहे रक्षसि।
- चन्दनदासः** - आर्य! अलीकमेतत्। केनाप्यनार्येण आर्याय निवेदितम्।
- चाणक्यः** - भो श्रेष्ठिन्! अलमाशङ्क्या। भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणामिच्छतामपि  
गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं ब्रजन्ति। ततस्तत्प्रच्छादनं  
दोषमुत्पादयति।
- चन्दनदासः** - एवं नु इदम् तस्मिन् समये आसीदस्मदगृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन  
इति।
- चाणक्यः** - पूर्वम् ‘अनृतम्’, इदानीम् “आसीत्” इति परस्परविरुद्धे वचने।
- चन्दनदासः** - आर्य! तस्मिन् समये आसीदस्मदगृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।
- चाणक्यः** - अथेदानीं क्व गतः?
- चन्दनदासः** - न जानामि।
- चाणक्यः** - कथं न ज्ञायते नाम? भो श्रेष्ठिन्! शिरसि भयम्, अतिदूरं  
तत्प्रतिकारः।
- चन्दनदासः** - आर्य! किं मे भयं दर्शयसि? सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं  
न समर्पयामि, किं पुनरसन्तम्?

**चाणक्यः** - चन्दनदास! एष एव ते निश्चयः?

**चन्दनदासः** - बाढम्, एष एव मे निश्चयः।



**चाणक्यः** - (स्वगतम्) साधु! चन्दनदास साधु।

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जने।

क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥

### शब्दार्थः

|                   |                        |                             |                       |
|-------------------|------------------------|-----------------------------|-----------------------|
| मणिकारश्रेष्ठिनम् | - रत्नकारं वणिं        | - मणियों का व्यापारी        | - Jeweller            |
| निष्क्रम्य        | - बहिर्गत्वा           | - निकलकर                    | - Exiling             |
| उपसृत्य           | - समीपं गत्वा          | - पास जाकर                  | - Going near          |
| परिक्रामतः        | - परिभ्रमणं कुरुतः     | - (दोनों) परिभ्रमण करते हैं | - Both move in circle |
| प्रचीयन्ते        | - वृद्धि प्राप्नुवन्ति | - बढ़ते हैं                 | - Increase            |
| संव्यवहाराणाम्    | - व्यापाराणाम्         | - व्यापारों का              | - Of trades           |
| आत्मगतम्          | - स्वगतम्              | - मन ही मन                  | - To oneself          |

|                        |                    |                                   |                               |
|------------------------|--------------------|-----------------------------------|-------------------------------|
| <b>शङ्कनीयः</b>        | - सन्देहास्पदम्    | - शंका करने योग्य                 | - Doubtful                    |
| <b>अखण्डिता</b>        | - निर्बाधा         | - बाधारहित                        | - Intact                      |
| <b>वणिज्या</b>         | - वाणिज्यम्        | - व्यापार                         | - Trade                       |
| <b>प्रीताभ्यः</b>      | - प्रसन्नाभ्यः     | - प्रसन्न जनों के प्रति           | - To pleasing persons         |
| <b>प्रतिप्रियम्</b>    | - प्रत्युपकारम्    | - उपकार के बदले<br>किया गया उपकार | - Requital                    |
| <b>अपरिक्लेशः</b>      | - दुःखाभावः        | - दुःख का अभाव                    | - Absence of<br>pain          |
| <b>आज्ञापयतु</b>       | - आदिशतु           | - आदेश दें                        | - Should order                |
| <b>अर्थसम्बन्धः</b>    | - धनस्य सम्बन्धः   | - धन का सम्बन्ध                   | - Monetary                    |
| <b>परिक्लेशः</b>       | - दुःखम्           | - दुःख                            | - Sad                         |
| <b>प्रष्टव्याः</b>     | - प्रष्टुं योग्याः | - पूछने योग्य                     | - Worth asking                |
| <b>अवगम्यते</b>        | - ज्ञायते          | - जाना जाता है                    | - Is known                    |
| <b>अविरुद्धवृत्तिः</b> | - अविरुद्धस्वभावः  | - विरोधरहित स्वभाव<br>वाला        | - Unopposing<br>behaviour     |
| <b>पिधाय</b>           | - आच्छाद्य         | - बन्द करके                       | - Closing                     |
| <b>राजापथ्यकारिणः</b>  | - नृपापकारकारिणः   | - राजाओं का अहित<br>करने वाले     | - Harmful for<br>kings        |
| <b>अलीकम्</b>          | - असत्यम्          | - झूठ                             | - False                       |
| <b>अनार्येण</b>        | - दुष्टेन          | - दुष्ट के द्वारा                 | - By an uncivilized<br>person |
| <b>पौराणाम्</b>        | - नगरवासिनाम्      | - नगर के लोगों के                 | - Of city dwellers            |
| <b>निक्षिप्य</b>       | - स्थापयित्वा      | - रखकर                            | - Keeping                     |
| <b>ब्रजन्ति</b>        | - गच्छन्ति         | - जाते हैं                        | - Go                          |
| <b>प्रच्छादनम्</b>     | - आच्छादनम्        | - छिपाना                          | - Hiding                      |
| <b>अमात्यः</b>         | - मन्त्री          | - मन्त्री                         | - Minister                    |
| <b>असन्तम्</b>         | - न निवसन्तम्      | - न रहने वाले                     | - Of absent                   |
| <b>बाढम्</b>           | - आम्              | - हाँ                             | - Yes                         |
| <b>संवेदने</b>         | - समर्पणे कृते सति | - समर्पण पर                       | - On surrendering             |
| <b>जने</b>             | - जनस्य विषये      | - व्यक्ति को लेकर                 | - Regarding a person          |

### अंतिम श्लोक का अन्वय तथा भावादि

**अन्वयः** परस्य संवेदने अर्थलाभेषु सुलभेषु इदं दुष्करं कर्म जने (लोके) शिविना विना कः कुर्यात्।

**भावः** परस्य परकीयस्य अर्थस्य संवेदने समर्पणे कृते सति अर्थलाभेषु सुलभेषु सत्सु स्वार्थं तृणीकृत्य परसंरक्षणरूपमेवं दुष्करं कर्म जने (लोके) एकेन शिविना विना त्वदन्यः कः कुर्यात्। शिविरपि कृते युगे कृतवान् त्वं तु इदानीं कलौ युगे करोषि इति ततोऽप्यतिशयित-सुचरितत्वमिति भावः।

**अर्थ-** दूसरों की वस्तु को समर्पित करने पर बहुत धन प्राप्त होने की स्थिति में भी दूसरों की वस्तु की सुरक्षा रूपी कठिन कार्य को एक शिवि को छोड़कर तुम्हारे अलावा दूसरा कौन कर सकता है?

**आशय-** इस श्लोक के द्वारा महाकवि विशाखदत्त ने बड़े ही संक्षिप्त शब्दों में चन्दनदास के गुणों का वर्णन किया है। इसमें कवि ने कहा है कि दूसरों की वस्तु की रक्षा करनी कठिन होती है। यहाँ चन्दनदास के द्वारा अमात्य राक्षस के परिवार की रक्षा का कठिन काम किया गया है। न्यासरक्षण को महाकवि भास ने भी दुष्कर कार्य मानते हुए स्वप्नवासवदत्तम् में कहा है— दुष्करं न्यासरक्षणम्।

चन्दनदास अगर अमात्य राक्षस के परिवार को राजा को समर्पित कर देता, तो राजा उससे प्रसन्न भी होता और बहुत-सा धन पारितोषिक के रूप में देता, पर उसने भौतिक लाभ व लोभ को दरकिनार करते हुए अपने प्राणप्रिय मित्र के परिवार की रक्षा को अपना कर्तव्य माना और इसे निभाया भी। कवि ने चन्दनदास के इस कार्य की तुलना राजा शिवि के कार्यों से की है, जिन्होंने अपने शरणागत कपोत की रक्षा के लिए अपने शरीर के अंगों को काटकर दे दिया था। राजा शिवि ने तो सतयुग में ऐसा किया था, पर चन्दनदास ने ऐसा कार्य इस कलियुग में किया है, इसलिए वे और अधिक प्रशंसा के पात्र हैं।

### अभ्यासः

#### 1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

- (क) कः चन्दनदासं द्रष्टुम् इच्छति?
- (ख) चन्दनदासस्य वणिज्या कीदृशी आसीत्?
- (ग) किं दोषम् उत्पादयति?

(घ) चाणक्यः कं द्रष्टुम् इच्छति?

(ङ) कः शङ्कनीयः भवति?

## 2. अधोलिखितप्रश्ननाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) चन्दनदासः कस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षति स्म?

(ख) तृणानां केन सह विरोधः अस्ति?

(ग) पाठेऽस्मिन् चन्दनदासस्य तुलना केन सह कृता?

(घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियं के इच्छन्ति?

(ङ) कस्य प्रसादेन चन्दनदासस्य वणिज्या अखण्डता?

## 3. स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) शिविना विना इदं दुष्करं कार्यं कः कुर्यात्।

(ख) प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृत्।

(ग) आर्यस्य प्रसादेन मे वणिज्या अखण्डता।

(घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः राजानः प्रतिप्रियमिच्छन्ति।

(ङ) तृणानाम् अग्निना सह विरोधो भवति।

## 4. यथानिर्देशमुत्तरत-

(क) 'अखण्डता मे वणिज्या'- अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?

(ख) पूर्वम् 'अनृतम्' इदानीम् आसीत् इति परस्परविरुद्धे वचने- अस्मात् वाक्यात् 'अधुना' इति पदस्य समानार्थकपदं चित्वा लिखत।

(ग) 'आर्य! किं मे भयं दर्शयसि' अत्र 'आर्य' इति सम्बोधनपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(घ) 'प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?

(ङ) तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे' अस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदं किम्?

## 5. निर्देशानुसारं सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत-

(क) यथा- कः + अपि - कोऽपि

प्राणेभ्यः + अपि - .....

..... + अस्मि - सज्जोऽस्मि।

आत्मनः + ..... - आत्मनोऽधिकारसदृशम्

(ख) यथा- सत् + चित् - सच्चित्

शरत् + चन्द्रः - .....

कदाचित् + च - .....

6. कोष्ठकेषु दत्तयोः पदयोः शुद्धं विकल्पं विचित्रं रिक्तस्थानानि पूरयत्-
- (क) ..... विना इदं दुष्करं कः कुर्यात्। (चन्दनदासस्य/चन्दनदासेन)
  - (ख) ..... इदं वृत्तान्तं निवेदयामि। (गुरवे/गुरोः)
  - (ग) आर्यस्य ..... अखण्डिता मे वणिज्या। (प्रसादात्/प्रसादेन)
  - (घ) अलम् ..... । (कलहेन/कलहात्)
  - (ङ) वीरः ..... बालं रक्षति। (सिंहेन/सिंहात्)
  - (च) ..... भीतः मम भ्राता सोपानात् अपतत्। (कुक्कुरेण/कुक्कुरात्)
  - (छ) छात्रः ..... प्रश्नं पृच्छति। (आचार्यम्/आचार्येण)
7. अधोदत्तमज्जूषातः समुचितविलोमपदानि गृहीत्वा लिखत-

|         |         |      |      |         |      |
|---------|---------|------|------|---------|------|
| असत्यम् | पश्चात् | गुणः | आदरः | तदानीम् | तत्र |
|---------|---------|------|------|---------|------|

- (क) अनादरः .....
- (ख) दोषः .....
- (ग) पूर्वम् .....
- (घ) सत्यम् .....
- (ङ) इदानीम् .....
- (च) अत्र .....

8. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य पञ्चवाक्यानि रचयत्-

यथा निष्क्रम्य- शिक्षिका पुस्तकालयात् निष्क्रम्य कक्षां प्रविशति।

- (क) उपसृत्य .....
- (ख) प्रविश्य .....
- (ग) द्रष्टुम् .....
- (घ) इदानीम् .....
- (ङ) अत्र .....

### योग्यताविस्तारः:

यह नाट्यांश महाकवि विशाखदत्त द्वारा रचित 'मुद्राराक्षसम्' नामक नाटक के प्रथम अङ्क से उद्धृत किया गया है। नन्दवंश का विनाश करने के बाद उसके हितैषियों को खोज-खोजकर पकड़वाने के क्रम में चाणक्य, अमात्य राक्षस एवं उसके कुटुम्बियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए चन्दनदास से वार्तालाप करता है, किन्तु चाणक्य को अमात्य राक्षस के विषय में कोई

सुराग न देता हुआ चन्दनदास अपनी मित्रता पर ढूँढ़ रहता है। उसके मैत्री भाव से प्रसन्न होता हुआ भी चाणक्य जब उसे राजदण्ड का भय दिखाता है, तब चन्दनदास राजदण्ड भोगने के लिये भी सहर्ष प्रस्तुत हो जाता है। इस प्रकार अपने सुहृद् के लिए प्राणों का भी उत्सर्ग करने के लिये तत्पर चन्दनदास अपनी सुहृद्-निष्ठा का एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

#### कविपरिचयः

‘मुद्राराक्षसम्’ इति नाटकस्य प्रणेता विशाखदत्तः आसीत्। सः राजवंशे उत्पन्नः आसीत्। तस्य पिता भास्करदत्तः महाराजस्य पदवीं प्राप्नोत्। विशाखदत्तः राजनीतेः न्यायस्य ज्योतिषविषयस्य च विद्वान् आसीत्। वैदिकधर्मवलम्बी भूत्वाऽपि सः बौद्धधर्मस्य अपि आदरमकरोत्।

#### ग्रन्थपरिचयः

‘मुद्राराक्षसम्’ एकम् ऐतिहासिकं नाटकम् अस्ति। दशाङ्केषु विरचिते अस्मिन्नाटके चाणक्यस्य राजनीतिकाशलस्य बुद्धिवैभवस्य राष्ट्रसञ्चालनार्थम् कूटनीतीनाम् निर्दर्शनमस्ति। अस्मिन्नाटके चाणक्यस्यामात्यराक्षसस्य च कूटनीत्योः संघर्षः।

#### भावविस्तारः

**चाणक्य-** चाणक्यः एकः विद्वान् ब्राह्मणः आसीत्। तस्य पितृप्रदत्तं नाम विष्णुगुप्तः आसीत्। अयमेव ‘कौटिल्य’ इति नामा प्रसिद्धः। केषाञ्चित् विदुषाम् इदमपि मतमस्ति यत् राजनीतिशास्त्रे कुटिलनीतेः प्रतिष्ठापनाय तस्याः स्व-जीवने उपयोगाय च अयं ‘कौटिल्यः’ इत्यपि कथ्यते।

चणकनामकस्य कस्यचित् आचार्यस्य पुत्रत्वात् ‘चाणक्यः’ इति नामा स प्रसिद्धः जातः। नन्दानां राज्यकालः शतवर्षीणि पर्यन्तम् आसीत्। तेषु अन्तिमेषु द्वादशवर्षेषु एतेन सुमाल्यादीनाम् अष्टनन्दानां संहारः कारितः तथा च चन्द्रगुप्तमौर्यः नृपत्वेन राजसिंहासने स्थापितः। अयमेकः महान् राजनीतिज्ञः आसीत्। एतेन भारतीयशासनव्यवस्थायाः प्रामाणिकतत्त्वानां वर्णनेन युक्तं “अर्थशास्त्रम्” इति अतिमहत्वपूर्णः ग्रन्थः रचितः।

**चन्द्रगुप्तमौर्यः**:- चन्द्रगुप्तः महापद्मनन्दस्य मुरायाः च पुत्रः आसीत्। चाणक्यस्य मार्गदर्शने अनेन चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तं राज्यं कृतम्।

**राक्षसः**:- नन्दराज्ञः स्वामिभक्तः चतुरः प्रधानामात्यः आसीत्।

**चन्दनदासः**:- कुसुमपुरनाम्नि नगरे महामात्यस्य राक्षसस्य प्रियतमं पात्रं मित्रञ्च आसीत्। स मणिकारः श्रेष्ठी च आसीत्। अस्यैव गृहात् राक्षसः सपरिवारः नगरात् बहिरगच्छत्।

#### भाषिकविस्तारः

- पृथक् और विना शब्दों के योग में द्वितीया तृतीया और पंचमी तीनों विभक्तियों का प्रयोग-  
यथा- जलं विना जीवनं न सम्भवति। द्वितीया  
जलेन विना जीवनं न सम्भवति। तृतीया  
जलात् विना जीवनं न सम्भवति। पंचमी

परिश्रमं पृथक् नास्ति सुखम्।  
 परिश्रमेण पृथक् नास्ति सुखम्।  
 परिश्रमात् पृथक् नास्ति सुखम्।

द्वितीया  
 तृतीया  
 पञ्चमी

**2. अनीयर् प्रत्ययप्रयोगः:**

|                |           |
|----------------|-----------|
| अत्यादरः       | शङ्कनीयः  |
| जन्मशाला       | दर्शनीया  |
| याचकेभ्यः दानं | दानीयम्   |
| वेदमन्त्राः    | स्मरणीयाः |

पुस्तकमेलापके पुस्तकानि क्रयणीयानि।

- (क) अनीयर् प्रत्ययस्य प्रयोगः योग्यार्थे भवति।
- (ख) अनीयर् प्रत्यये ‘अनीय’ इति अवशिष्यते।
- (ग) अस्य रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु चलन्ति।

|       |           |              |              |
|-------|-----------|--------------|--------------|
| यथा - | पुँलिङ्गे | स्त्रीलिङ्गे | नपुंसकलिङ्गे |
|       | पठनीयः    | पठनीया       | पठनीयम्      |

इनके रूप क्रमशः देववत्, लतावत् तथा फलवत् चलेंगे।

**3. उभ सर्वनामपदम् ( सर्वदा द्विवचनम् )**

|           |                           |
|-----------|---------------------------|
| पुँलिङ्गे | नपुंसकलिङ्गे/स्त्रीलिङ्गे |
| उभौ       | उभे                       |
| उभौ       | उभे                       |
| उभाभ्याम् | उभाभ्याम्                 |
| उभाभ्याम् | उभाभ्याम्                 |
| उभाभ्याम् | उभाभ्याम्                 |
| उभयोः     | उभयोः                     |
| उभयोः     | उभयोः                     |

